

(१६)

ॐ आरती श्री गणनन महाराजनी ॐ

आरती अङ्गा हिनकरकी । गणनन समये गुरुपरवी ॥३॥

नगन (दग) भर ओलिया । तेज पुंजकी दृष्टि काया ॥

आधडानी—क्रांत सुनी ग्यानी

प्रगट शेगांवडे हिनकरकी गणनन० ॥१॥

आजन-आडु अविनाशी । अंतर्यामी मुखराशी ॥

दृष्टि अवतारी—निलेच्छाधारी

अजन्मा अतिपरमेश्वरकी गणनन० ॥२॥

दासिकतासे दूर रहेना । सुधे इबेमे जल आना ॥

दत्त अवतार—वन्य छलीतार

सनातन क्रत्य यतिपरकी....गणनन० ॥३॥

हुम्हारे चरण्यमें जे आवे । जन्म भरण्यसे छुट जावे ॥

श्री गुरुहेव चरण्यकी सेव—विष्वेष्ठे नाथ के नटपरकी

गणनन समये गुरुपरवी.... ॥४॥

